# विषय-सूची


| | | |
|---|---|---|
| 1. | **प्रस्तावना** | 8 |
| 1.2 | शोध का आधार (उपकल्पना) | 9 |
| 1.3 | अंतरविषयक प्रासंगिकता | 9 |
| 1.4 | विषय के सम्बंध में हुए काम | 9 |
| 1.5 | अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हुए काम | 10 |
| 1.6 | शोध प्रविधि | 10 |
| 1.7 | प्राथमिक स्रोत | 10 |
| 1.8 | द्वितीयक स्रोत | 10 |
| 1.9 | शोध का उद्देश्य | 11 |
| 1.10 | शोध की समस्या | 11 |
| 1.11 | शोध की सीमाएँ | 11 |
| 1.12 | अध्याय परिचय | 11 |
| 1.13 | उपसंहार | 13 |
| 2. | **वेश्यावृत्ति और सामुदायिक वेश्यावृत्ति** | **14** |
| 2.1 | वेश्यावृत्ति-परिचयात्मक बिंदु | 15 |
| 2.1 | परिभाषा | 19 |
| 2.3 | वेश्यावृत्ति के कारण | 20 |
| 2.4 | वेश्याओं की दशा | 21 |
| 2.5 | भारत में सामुदायिक वेश्यावृत्ति | 23 |
| 2.5.1 | जरायम पेशा जातियाँ और सामुदायिक वेश्यावृत्ति | 24 |
| 2.6 | सामुदायिक वेश्यावृत्ति के कारण | 26 |
| 2.7 | जरायम पेशा समुदायों में वेश्याओं की दशा | 28 |
| 3. | **'रेत' उपन्यास में स्त्री** | 31 |
| 3.1 | कंजर समुदाय में वेश्यावृत्ति | 32 |
| 3.2 | 'रेत' की कथावस्तु | 34 |
| 3.3 | भाभी की भूमिका | 35 |
| 3.4 | बुआ की भूमिका | 41 |
| 3.5 | वेश्या बनने के सामाजिक, आर्थिक कारण | 43 |
| 3.6 | बुआ बनने की इच्छा | 46 |
| 3.7 | रीति-रिवाजों की लालसा | 47 |

3.8 व्यवहारिक जीवन शैली 51
3.9 न्याय व्यवस्था 53

**4. 'रेत' उपन्यास में पुरुष** 56
4.1 सभ्य समाज में पुरुष 57
4.2 पति 58
4.3 पुलिस 69
4.4 ग्राहक 61
4.5 वैद्यजी 68

**5. मुक्ति का प्रश्न** 73
5.1 देह से मुक्ति की कामना 74
5.2 धन की सुगम उपलब्धता (मुक्ति के मार्ग में बाधा) 75
5.3 देह के रास्ते देह बनने से मुक्ति 77
5.4 सेक्स वर्कर का दर्जा 79
5.5 सफलता के लिए देह प्रयोग 80
5.6 सभ्य समाज द्वारा अस्वीकार 86

**6. उपसंहार** **8**9
**7. संदर्भ ग्रंथ सूची** 96

# अध्याय :एक

## प्रस्तावना

1. शोध का आधार (उपकल्पना)
2. अंतरविषयक प्रासंगिकता
3. विषय के सम्बंध में हुए काम
4. अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हुए काम
5. शोध प्रविधि
6. प्राथमिक स्रोत
7. द्वितीयक स्रोत
8. शोध का उद्देश्य
9. शोध की समस्या
10. शोध की सीमाएँ
11. अध्याय परिचय
12. उपसंहार

## प्रस्तावना

जिस तरह औरत को औरत बनाया जाता है उसी तरह वेश्या भी बनाई जाती। समाज जो स्त्री को वेश्या बनाता है वही उसे अपने से हमेशा अलग ही रखता है। वेश्यावृत्ति हर युग में होती थी और आज भी उसका व्यापक रूप देखने को मिलता है। औरतें उठाई जाती हैं, उन्हें बेचा जाता है। उनका इतना और इस तरह से शोषण किया जाता है कि अंत: वह वस्तु बनने को स्वीकार कर ही लेतीं हैं।

भारत के कुछ समुदाय ऐसे हैं जो सामुदायिक वेश्यावृत्ति को अपना पेशा बना चुके हैं। ये समुदाय अधिकत्तर ज़रायम पेशा हैं। समाज क्योंकि इन्हें नहीं अपनाता इसीलिए इस समुदाय के लोग अपना जीवन चलाने के लिये अपनी स्त्रियों को वेश्यावृत्ति में प्रवृत करते हैं।

सामुदायिक वेश्यावृत्ति वाले समुदायों में लड़के के पैदा होने की कामना नहीं की जाती बल्कि लड़की के पैदा होने पर खुशियाँ मनाई जाती हैं। ये ऐसे समुदाय हैं जो पितृसत्तात्मक समाज से बिल्कुल विपरीत दिखाई देते हैं, पर इनमें भी पितृसत्ता है। जो अलग रूप में सामने आती है। घर की मुखिया औरत होती है, वही सब निर्णय लेती है। यहाँ लड़कों को गर्भ में मार दिया जाता है। ऐसी मातृसत्ता कहलाने वाली भी संस्था भी महिलाओं का शोषण करने से नहीं चुकती। घर में आई बहु को इस मातृसत्तात्मक समाज में भी शोषण का शिकार होना पडता है। वह घुट - घुट कर जीती है और चाहती है कि उसे इस नरक से आज़ादी मिले।

सामुदायिक वेश्यावृत्ति में भारत के कुछ राज्य लिप्त हैं। राज्यस्थान में बडे पैमाने पर सामुदायिक वेश्यावृत्ति का कार्य हो रहा है। ऐसे ही समुदाय को 'रेत' उपन्यास चित्रित करता है। कंजर समुदाय को आधार बनाकर लिखा गया यह उपन्यास समाज के उस यथार्थ को बताता है जिसमें औरत मात्र वस्तु बनकर रह जाती है। खिलावड़ी रुकिमणी अपनी देह को आधार बनाकर सफलता हासिल करती है। देह के खरीदार यदि दूसरी देह के पास चले जाते है

तो 100-100 रुपये के पीछे इनमें भंयकर युद्ध होता है। यह युद्ध भविष्य के खतरे के कारण होता है। इन लोगों का पेशा वेश्यावृत्ति है। इसीलिए पुलिस से सांठगांठ भी करनी पड़ती है। मोटे ग्राहक को देखकर खिलावड़ी स्वयं पुलिस को ख़बर देती हैं, और कई बार ग्राहक को छुड़वाने के नाम पर खुद भी पुलिस का शिकार बनती हैं।

पितृसत्तात्मक समाज में सामुदायिक वेश्यावृत्ति की औरतें क्या ज़िंदगी जी रही है इस बात को उपन्यास चित्रित करता है। इस समाज में देह व्यापारी स्त्री एक वस्तु मात्र रह जाती है जिसे कोई भी खरीद सकता है। पितृसत्तात्मक समाज जहाँ एक तरफ औरत की यौनिकता पर नियंत्रण करता है वहीं दूसरी तरफ इन सामुदायिक वेश्याओं की यौनिकता को कुछ नहीं मानता है।

**शोध का आधार ( उपकल्पना )**

भारत में सामुदायिक वेश्यावृत्ति के बारे में विभिन्न माध्यमों से जानकारी एकत्र की गई और उन सूचनाओं के आधार पर 'रेत' उपन्यास में सामुदायिक वेश्यावृत्ति के चित्रण का नारीवादी दृष्टि से विश्लेषण किया गया है।

**अंतरविषयक प्रासंगिकता**

मेरी नज़र में इस शोध का उपयोग नारीवादी अध्ययन के साथ-साथ साहित्य में किया जा सकता है। सामुदायिक वेश्यावृत्ति के कारण व वेश्याओं की समस्याओं को 'रेत' उपन्यास के माध्यम से शोध में प्रस्तुत किया गया है।

**विषय के सम्बन्ध में हुए काम**

सामुदायिक वेश्यावृत्ति पर अभी तक मेरी दृष्टि में बहुत काम हुआ है पर सामुदायिक वेश्यावृत्ति के संदर्भ में 'रेत' उपन्यास पर काम अभी तक मेरी दृष्टि में काम नहीं हुआ है। अतः ये मेरा मौलिक काम होगा।